भगवत् कृपा

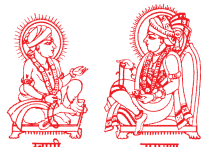

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 24 अंक : 7 | गुरुवार, 26-7-2001 | वार्षिक चंदा : 50-00

रक्षाबंधन...

निश्चल प्रेम व पवित्रता के रिश्ते की खुश्बू फैलाता
रक्षाबंधन का त्यौहार नज़दीक आ रहा है...
और
प्रगट के उपासकों के लिए तो यह एक अनोखा पर्व है !
तो, आइये–
इस मंगल पर्व निमित्त
4 अगस्त 2001 शनिवार
सुबह 7:00 से 9:00
'ताड़देव' मंदिर में इकट्ठे होकर
प.पू. गुरुजी की निश्रा में सच्चा रक्षाकवच प्राप्त करने प्रार्थना करें...

प्रसाद : 9:15

स्थान : ***श्री अक्षरपुरुषोत्तम (स्वामिनारायण) मंदिर***, *ताड़देव,*
काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोकविहार-III, दिल्ली -110 052

सूचना: जो उपरोक्त समय पर सुबह लाभ लेने नहीं आ सकते, वे दिन में किसी भी समय आ करके 'राखी' बंधवा सकेंगे।

रक्षाकवच की प्रार्थना — रक्षाबंधन

''भगवान और संत हमारी अर्जी सुनते हैं।
और... हालात चाहे कितने ही कठिन हों,
पर—महाराज की मूर्ति याद करके
'स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...' धून करने लग पड़ें,
तो कठिनाईयाँ टल जाती हैं
तथा
चाहे कैसी ही आफ़त आ पड़ी हो या माहौल बिगड़ा हो
उससे भी हमारी रक्षा होती है।''

— गुरुहरि योगीजी महाराज

अहो ! 'स्वामिनारायण महामंत्र द्विशाताब्दी' का
मंगलकारी वर्ष चल रहा है
और...
ऐसे गुणातीत स्वरुपों के दिव्य आशीर्वचन तो शाश्वत् हैं।
इस जीवंत महामंत्र की शक्ति का—सक्षमता का हम सभी ने
अपने जीवन में अलग-अलग रुप में अनुभव किया भी है।
यदि भगवान, संत व भक्तों की महिमा से भरे रह कर,
कृतार्थभाव से 'स्वामिनारायण' महामंत्र का
यूं अखंड रटन करते रहेंगे,
तो हर पल हर प्रकार से
हमेशा हमारी रक्षा होगी, होगी और होगी ही।
इतिहास साक्षी है कि—
परोक्ष में प्रहलाद्, मीरां, ध्रुव, नरसिंह मेहता आदि भक्तों की
हर संजोगों में हर प्रकार से प्रभु ने रक्षा करी है।
और... हमारे प्रभु तो
ब्रह्मस्वरूप संत द्वारा पृथ्वी पर मानवस्वरूप में प्रगट हैं !
तो, अज्ञानवश अन्य आधार लेने की बजाय,
अनंत हाथों वाले समर्थ प्रगट प्रभु से ही रक्षा क्यों ना माँगे ?

हम सभी का खूब सौभाग्य है कि हमारे स्थूल व सूक्ष्म दोनों की अनंत हाथों से-हर प्रकार से रक्षा करने वाले प्रगट प्रभु गुणातीत स्वरुप द्वारा हमें खूब कृपा करके मिले हैं। जीवन के हर एक उतार-चढ़ाव, अनेक ज्वार-भाटों और ऐसी कई मुश्किलों में वे हमारी रक्षा करने दौड़ कर आए हैं—यह भी हम सभी ने अनुभव किया है। इससे भी अधिक, हमने अनुभव किया कि प्रभु व संत के प्रति निष्ठा, निर्दोषभाव, विश्वास, आत्मबुद्धि व प्रीति भी खूब करुणा करके उन्होंने स्वयं ही हमारे जीव में दृढ़ करा दी है... उनका ऋण तो हम जन्मोंजन्म तक कभी भी चुका नहीं पाएंगे !

जीव-प्राणीमात्र अपने कर्मों के अनुसार सुख-दुःख पाता है। किन्तु भगवान का जो दृढ़ आसरा करता है, उसके माथे से काल, कर्म, माया की हकूमत टल जाती है। देव-देवी, मैलीविद्या, भूतप्रेत, जादु-टोना, डोरा-धागा, मंत्र-तंत्र, ज्योतिष, ओझा, तांत्रिक, ग्रह-पनौती आदि कभी भी भगवान व संत के ऐसे शरणागत का कुछ नहीं बिगाड़ सकते, क्योंकि ऐसा भक्त हर संजोगों में केवल प्रभु व संत का ही दृढ़ आसरा एक निष्ठा से-अनन्यभाव से पकड़े रखता है। प्रभु का सच्चा भक्त दिल की सच्चाई से मानता है कि सर्व कर्ता-हर्ता सर्वोपरि व सदा दिव्य साकार केवल मेरे प्रगट प्रभु ही हैं—मुझे मिले संत ही हैं... **दास के दुश्मन हरि कभी नहीं हो सकते।** भले मुझे फिलहाल कुछ समझ नहीं आता, पर वे जो करते होंगे, मेरे परम हित के लिए करते होंगे। परिस्थितियाँ चाहे कितनी ही विपरीत क्यों ना हो जाएं, सब लुट जाता जैसा भी लगे—भगवान का भक्त उसे मिले प्रभु की सत्ता को सर्वोपरि मान कर उसकी शरण में निर्भय व निश्चिंत रह कर केवल भजन का ही आधार लेता है।

वड़ताल के पाँचवे वचनामृत में भगवान स्वामिनारायण ने अनन्य आसरे वाले भक्त का लक्षण बताते हुए कहा है कि—ऐसा दृढ़ आसरा जिसे हो, उसे महाप्रलय जैसा दुःख आ पड़े, तब भी 'भक्त' भगवान के सिवा अन्य किसी को रक्षा करने वाला नहीं मानता।

गढडा प्रथम प्रकरण के 33वें वचनामृत में श्रीजी महाराज बोले— 'भगवान का दृढ़ आसरा ही सभी साधनों में एक बड़ा साधन है, जिससे कि भगवान राजी होते हैं और वह आसरा अति दृढ़ होना चाहिए, जिसमें ज़रा-भी खोखलापन न हो।'

ऐसे दृढ़ आश्रय वाले भक्त को तो यदि भगवान व संत द्वारा दिए हुए आशीर्वाद कुछ नहीं फलते दिखाई पड़ें, तो वह दिल की सच्चाई से यही समझता है कि मुझे अगर ज्यादा पैसा वगैरह मिल जाता, तो मैं शायद गलत रास्ते पर चला जाता, अधिक विषय-वासनाओं में फंस जाता। अतः पैसे-वैभव-कीर्ति आदि का ना मिलना ही मेरे परम हित में होगा।

भगवान स्वामिनारायण ने गुरु गुणातीत को अपने साथ लाकर व गुणातीत संतों द्वारा धरती पर अपनी परंपरा अखंडित रख कर हमें निहाल-निहाल कर दिया है... हम सब के जीवन में ऐसे संत ने अपना विशेष स्थान लिया है और वे सैकण्ड-सैकण्ड हमारे स्थूल व सूक्ष्म, व्यावहारिक रुप में एवं आध्यात्मिक रुप में यानि—इंद्रियों-अंतःकरण के भावों से निरंतर रक्षा करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं...

पंजाब के एक हरिभक्त करीब चार-पाँच साल पहले प.पू. गुरुजी के संपर्क में आए... एक बार बहनों के पंजाब जाने पर सिर्फ सद्भावना से ही उन्होंने अपनी मारुति कार बहनों को विचरण के लिए देकर ऐन मौके की सेवा करी... तब तक उनका इतना ही परिचय था। इस बात के करीब दो महिने बाद ही रात

को दुकान से पैसे लेकर वे घर लौट रहे थे। रास्ते में मुँह पर कपड़ा बांधे दो व्यक्तियों ने उन्हें अंधेरे में पकड़ कर मुँह दबा दिया और कनपटी पर पिस्तौल रख दी व रुपयों का बैग खींचने लगे... ये भाईसाहब तो मन ही मन प.पू. गुरुजी को याद करके 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' भजन करने लगे। इतने में ही उन दो व्यक्तियों में से एक व्यक्ति के मुँह पर से कपड़ा अपने आप खुल गया ! भाईसाहब ने तुरंत उस व्यक्ति को पहचान लिया कि वो कौन है ! अपनी पहचान के डर से वो दोनों उन्हें छोड़ कर भाग गए और... ये भाईसाहब तो सत्संग में एकदम नए-नए ही जुड़े थे। पर, उन्हें उस दिन से भीतर में विश्वास बैठ गया कि प.पू. गुरुजी को याद करके मैंने जो 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' भजन किया, उसी के फलस्वरुप मेरी रक्षा हुई है– वर्ना तो आज मेरी मौत निश्चित ही थी।

हम सभी जानते हैं कि 26 जनवरी 2001 की सुबह गुजरात में कितना भयंकर भूकम्प आया... उस समय हुई जान-माल की बर्बादी-हादसे से अभी तक लोग उभर नहीं पाए। लेकिन सभी को आश्चर्य है कि इतने भयानक हादसे में 'स्वामिनारायण' की अनन्य निष्ठा वाले भक्तों को ज़रा भी आंच नहीं आई, सभी की रक्षा हुई ! यह बात अपने आप में एक अनूठा सशक्त प्रमाण है कि हम कितनी समर्थ सेरेछाया में हैं। हमारे चारों ओर एक रक्षाकवच बना हुआ है।

यह तो स्थूल रुप से हुई रक्षा के उदाहरण हमने पढ़े, पर असली रक्षा तो जीव की मांगनी चाहिए। शरीर तो नाशवंत है, पर आत्मा तो अजर-अमर है। अतः जीव भगवान के रास्ते से भटक ना जाए, वह रक्षा अधिक जरुरी है। जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति हो वह सच्ची रक्षा है।

सारंगपुर में एक बार एक संत को देह की खूब पीड़ा होने पर सभी ने गुरुहरि योगीजी महाराज से प्रार्थना करी कि आप महाराज को प्रार्थना करें कि– इन्हें जल्दी धाम में ले जाएं ताकि पीड़ा से मुक्ति हो। गुरुहरि यागीजी महाराज बोले– 'चौदह दिन बाद धाम में ले जाएंगे।' तो संतों ने कहा कि बापा ! आज ही नहीं ले जा सकते ?

गुरुहरि योगीजी महाराज बोले– श्रीजी महाराज को प्रार्थना करें तो आज भी ले जाएं, लेकिन इसे दूसरे 14 जन्म लेने पड़ेंगे। 14 जन्म की कसर 14 दिन में निकालने की साधु की दया को हमारा मायिक मन, हमारी मायिक बुद्धि भला कैसे जान पाएगी-समझ पाएगी ?

भक्त प्रहलाद् ने भगवान से कहा कि– 'आपने मेरे शरीर की रक्षा करी इसे मैं रक्षा नहीं मानता, लेकिन इंद्रियों-अंतःकरण से आप मेरी रक्षा करें, उसे ही मैं सच्ची रक्षा मानता हूँ।'

सो, अनन्यनिष्ठा से– 'मेरे तो तुम ही एक आधारा...' की भावना से राखी के इस मंगल अवसर पर समर्थ प्रगट प्रभु से हम यही रक्षा माँगें कि एकांतिक धर्म से हम भटक ना जाएं और भगवान स्वामिनारायण व गुणातीत स्वरुपों में हमें कभी भी मनुष्यभाव-मायिकभाव ना आए।

तो, आइये स्वामिनारायण महामंत्र द्विशताब्दी के इस मंगल वर्ष में यह रक्षाकवच प्राप्त करने वर माँगें-कृतनिश्चयी बनें...

✡ ✡ ✡ ✡ ✡

श्रवण, मनन, निदिध्यासन

- साधु का काम यही है कि हम जो भटक गए हैं, किसी तरह हमें समझा दें कि हमारी कक्षा ही अलग है... यह बात यदि हमारे दिमाग में फिट बैठ जाए तो बस सुखी-सुखी...
- सच्चा अक्लमंद वो है जो अपनी गल्ती का एहसास होने पर स्वीकार करे और दोबारा गल्ती रिपीट ना करे।
- एक महीने की धून्य दौरान हम अपनी बैटरी इतनी चार्ज कर लें कि सारा वर्ष फिर अपना काम उससे चलता रहे।
- संत की बातें केवल हमारे कान सुनते हैं, पर मन नहीं सुनता। यदि हमारा मन सुने व भीतर में वह बात बैठ जाए, तो परेशानी आएगी ही नहीं।
- हमारा मन यदि स्वीकार कर लेगा कि भक्तों की कसनी उठानी है, तो फिर थकान नहीं लगेगी। कसनी देह की होती है, मन की होती है, वचन की होती है।
- कोई कुछ कह दे, और–

– हमें बुरा लग जाए, तो हमने कसनी सहन नहीं करी।

– हमारा मुँह चढ़ जाए, तो हमने कसनी सहन नहीं करी।

– हमें क्षोभ हो जाए यानि कसनी सहन नहीं करी।

– कोने में जाकर बैठ जाएं यानि कसनी सहन नहीं करी।

इससे भी आगे– बड़बड़ाहट करने लगते हैं या दूसरे-तीसरे के पास बोलने लग पड़ते हैं !

और... फिर हम साधु पर ब्लेम डालते हैं कि इन्होंने हमारा तो कुछ किया नहीं। पर, ज़रा सोचना कि जैसे पू.काकाजी ने कहा था वैसा हमने करा ? उस तरह हम चले ?

- शुकदेवजी भागवत् की कथा करते थे, तो सुबह उठ कर खुद सभी कुटियाँ पर जाकर कथा में आने का निमंत्रण देकर आते कि कथा सुनने आना। हमारा मन इस बात पर यही सोचेगा कि खुद कथा करते हैं, उसका प्रोपगन्डा-एड्वरटाईझमेन्ट कर रहे हैं। पर, शुकदेवजी को यह महिमा थी कि भगवान कृष्ण की कथा में जो आएंगे, वो कथा सुन

कर श्रेय के मार्ग पर चलेंगे तो उनका थोड़ा पुण्य मुझे मिल जाएगा... असल में कई चीजों को समझने-करने थोड़ी हायर कोन्सशियसनेस से देखना पड़ता है। वर्ना तो हम गल्त समझ लेंगे। अपनी समझ में फर्क पड़ जाएगा।

✹ ग्राम्यवार्ता का लौकिक अर्थ यह है कि– समाज, व्यवहार, पोलिटिक्स वगैरह की बातें करना-चौधराहट करना। पर, सत्संग में– 'फलां ऐसा-ढीकना ऐसा... यूं भक्तों के बारे झंझट की बातें करना' उसे कही जाती है–ग्राम्यवार्ता !

अलविदा

सफ़ेद टोपी, कुर्ता व धोती पहने हुए **पू. कांतिभाई देसाई** (मुंबई) को प.पू. काकाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी एवं पू. कांतिकाका के साथ अकसर कईयों ने देखा होगा। संप्रदाय की तवारीख के पन्नों पर घटी घटनाओं एवं गीता जैसे शास्त्रों के मर्मज्ञ पू. कांतिभाई देसाई भक्तिभावना से भरे दिल के थे। व्यावहारिक सूझ व सत्संग के ममत्व के कारण मान-अपमान में 'स्थितप्रज्ञता' उनमें सहज दिखाई पड़ती। सो ही वे प.पू. काकाजी के भरोसे के पात्र थे। दिल्ली में जब सत्संग की शुरुआत करनी थी, तब प.पू. गुरुजी के साथ प.पू. काकाजी ने उन्हें भेजा था। दिल्ली में प.पू. गुरुजी को सहाय रुप होने की भावना से उन्होंने यहां कई मुक्तों को 'स्वामिनारायण' धर्म का परिचय करा के प.पू. गुरुजी के साथ जोड़ा। इनकी इस सेवा के लिए दिल्ली का समाज हमेशा उन्हें याद करेगा। किसी भी नई जगह जाना होता था, तो प.पू. स्वामिजी भी यूं पू. कांतिभाई देसाई को अपने साथ ले जाने इच्छुक रहते।

मुंबई-ताड़देव मंडल के निजी ऐसे पू. कांतिभाई देसाई को प.पू. योगीबापा के वचन से प.पू. काकाजी व सभी गुणातीत स्वरुपों के प्रति निर्दोषबुद्धि व दिव्यभाव की दृढ़ता हुई और बापा ने उन्हें प.पू. काकाजी में जुड़ कर सत्संग की सेवा करने का स्पष्ट संकेत दिया। तब से प्रगट की निष्ठा दृढ़ करके संतों-बहनों व गुणातीत समाज के मुक्तों की सेवा में वे लगे रहे और 6 जुलाई को अक्षरनिवासी होकर ब्रह्मस्वरुप प.पू. काकाजी के चरणों में जाकर सदैव के लिए बैठ गए !

पू. कांतिभाई देसाई प.पू. काकाजी के साथ अनन्यभाव से जुड़े हुए थे; परन्तु साथ ही साथ प.पू. काकाजी के सर्वदेशीय सिद्धांत से उन्हें सभी गुणातीत स्वरुपों के प्रति भी खूब पूज्यभाव था और ताड़देव के नव योगेश्वरों के साथ तो एक अनुपम आत्मीयता थी...

भगवान स्वामिनारायण व सभी गुणातीत स्वरुप उनके परिवारजनों को अपार बल दें व इनकी भाँति वे पू. भरतभाई एवं गुणातीत स्वरुपों के साथ निर्दोषबुद्धि-दिव्यभाव का संबंध दृढ़ करें ऐसी प्रभुचरणों में प्रार्थना !

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 30.7.2001 सोमवार – एकादशी, व्रत
(2) दि. 4.8.2001 शनिवार – श्रावणी पूर्णिमा, राखी
(3) दि. 12.8.2001 रविवार – जन्माष्टमी, व्रत
(4) दि. 15.8.2001 बुधवार – एकादशी, व्रत-भारत स्वातंत्र्य दिन

To

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Monthly Magazine
Despatched on 25/26 of every month
If undelivered please return to :—
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'Tardeo', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
Rama Vihar, Delhi-110081 Phone: 5483035
Printed at : **Delux Offset Printers**
308/4, Shahzadabad, Opp. Rohtak Road,
Daya Basti, Delhi